

Suzlon mulls developing clean energy projects in Gujarat

BS REPORTER

Ahmedabad, 10 January

Suzlon Group, the world's fifth largest wind-turbine maker, has expressed intent to develop clean energy projects of 3,000 megawatt (Mw) in Gujarat over the next five years.

Taking up the challenge put forth by Prime Minister Narendra Modi, of establishing 2,000 Mw wind energy in Gujarat, Suzlon has till date already generated 1,800 Mw. This accounts for 20 per cent of Suzlon's total pan-India capacity of over 8,250 Mw, the company stated in an official communique.

According to Suzlon, the wind energy projects will attract investments with an aim to create sustainable eco-

nomic growth for the state in addition to reinforcing the 'Make in India' campaign initiated by the government.

The project has the potential to create 6000 direct and 75,000 indirect jobs in the state.

"Renewable energy is the key catalyst for the economic growth of our country. Wind energy will give a fillip to the manufacturing industry.

With the central government's goal of 'Make in India', Vibrant Gujarat is poised to attract investments and establish linkages across various value chain participants. This will reinforce Gujarat's position as India's leading market in renewable

energy and illustrate the state's commitment to power a low-carbon economy," said Suzlon Group Chairman Tulsi Tanti, adding that the contribution of wind energy in the energy architecture mix across the world has increased manifold.

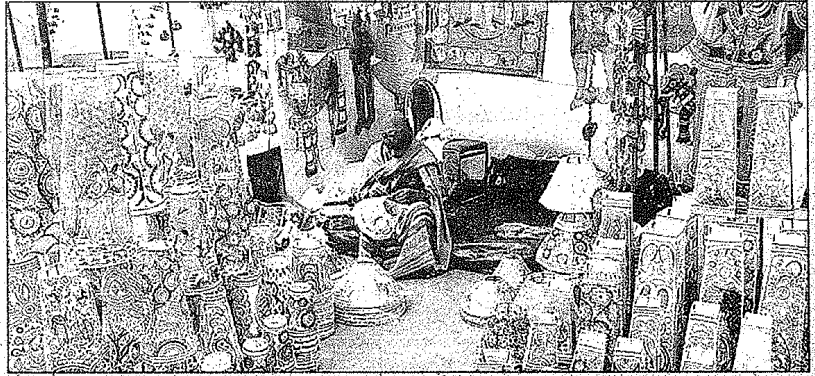
The Gujarat government's initiative to scale up wind energy to ₹10 gigawatt is aimed at giving a fillip to local manufacturing. According to Suzlon, the central government's thrust on clean energy has opened up opportunities for the growth of the small and medium enterprise industries and sectors such as textiles, automobiles, agricultural products (food processing), cold storage and defence.

The project has the potential to create 6000 direct and 75,000 indirect jobs in the state

दिल्ली हाट में संस्कृति का संगम

आइएनए में चल रहा 29वां दस्तकारी हाट शिल्प बाजार, काफी संख्या में पहुंच रहे दर्शक

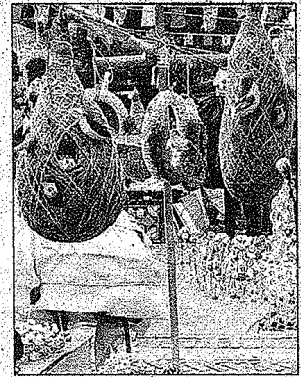
जगमग संवाददाता, दक्षिणी दिल्ली : आइएनए स्थित दिल्ली हाट में चल रहे 29वें दस्तकारी हाट शिल्प बाजार में इन दिनों पूरे देश की संस्कृति व कला का संगम देखने को मिल रहा है। दस्तकारी हाट समिति द्वारा आयोजित इस बाजार में पहले दिन से लेकर अभी तक बड़ी संख्या में दर्शक पहुंच रहे हैं। बाजार में भारत के अलग-अलग प्रदेशों के गांवों, कस्बों और शहरों से आए शिल्पकार अपना हुनर दिखा रहे हैं। बाजार 15 जनवरी तक लगेगा। शिल्पकारों व कलाकारों के इस संगम से बाजार में जैसे पूरे देश की कला व संस्कृति उतर आई है। यहां विभिन्न प्रदेशों से आए शिल्पकार परंपरागत शिल्प वाली टोकरी, चर्म शिल्प, मोतीकारी, कशीदाकारी, बुनाई और प्राकृतिक रंगों वाली चीजों को लेकर पहुंचे हैं। दिल्ली हाट में इस वक्त 12 से अधिक राज्यों के सैकड़ों कलाकार अपनी कृतियों के साथ मौजूद हैं। यहां एक तरफ जहां हथकरघों से बुनाई का प्रदर्शन किया जा रहा है, वहीं दूसरी तरफ दर्शकों को चाक पर मिट्टी के बर्तन बनाना सिखाया जा रहा है। बाजार में बिहार, गुजरात, जम्मू-कश्मीर, झारखंड, छत्तीसगढ़, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश आदि से आए राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार विजेता कलाकार हिस्सा ले रहे हैं। बाजार में तार के खिलौने, मधुबनी पेंटिंग, गोंड चित्रकारी, पेपर मेशी, धागों की ज्वेलरी, कठपुतलियां, बर्तन और बांस के सामान आदि बनाने की कार्यशालाएं भी आयोजित की जा रही हैं। कार्यशाला में शिल्प निर्माण से संबंधित जानकारी भी उपलब्ध कराई जा रही है।



दिल्ली हाट में बकरे की खाल से बनाए गए लैप शेड व अन्य सजावटी सामान।



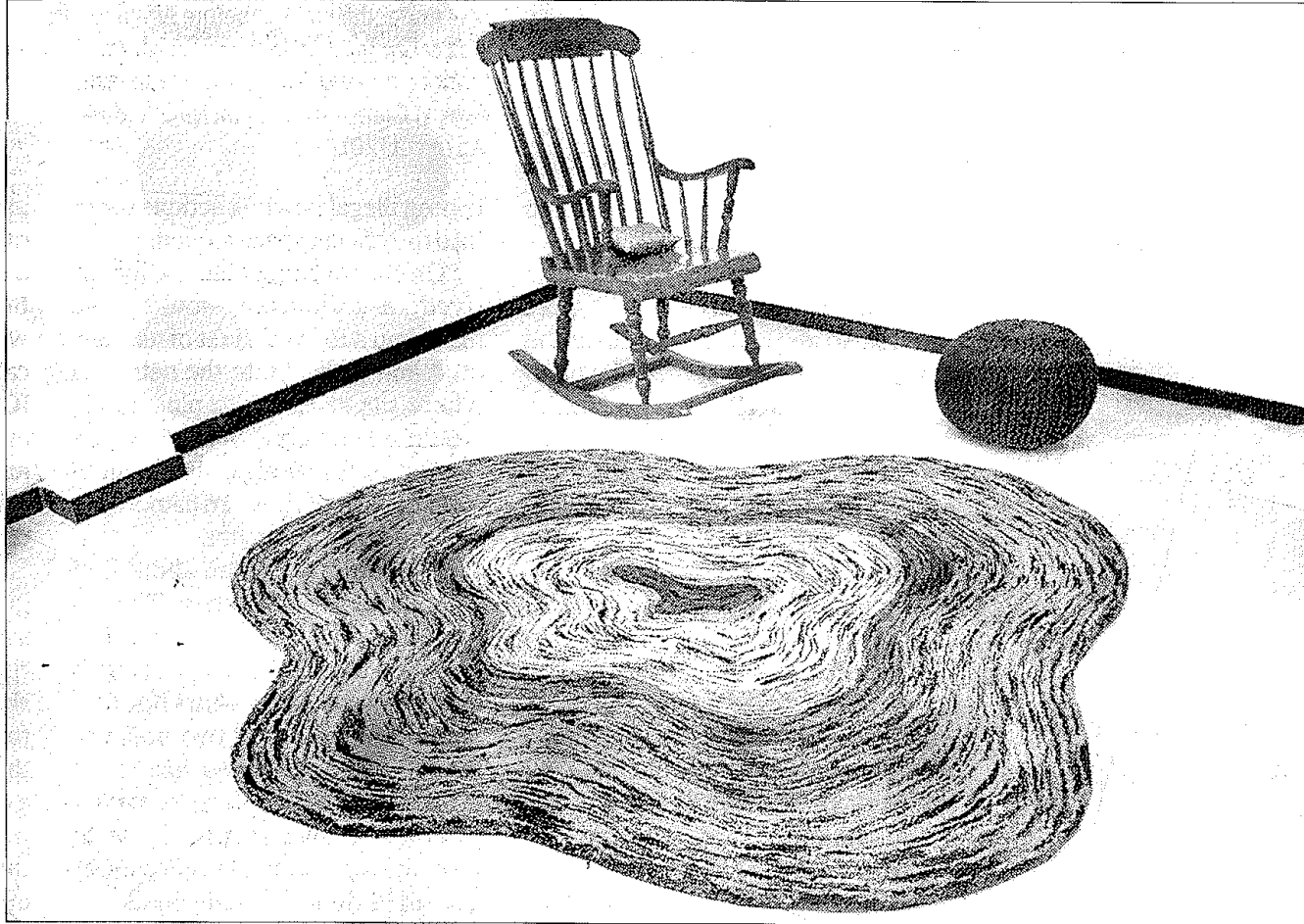
बच्ची को मिट्टी के बर्तन बनाना सिखाता कलाकार।



रिबन व घास से बने सामान।

Blowing in the Wind

Professor and textile art designer Kripal Mathur pays tribute to PB Shelley's *Ode to the West Wind* through her textile-based artworks



(Above and below) Untitled works from the exhibition

PALLAVI CHATTOPADHYAY

THANKS TO her father, who was an English professor at the National Defence Academy, Pune, Kripal Mathur was introduced to literary masters such as Shakespeare, Milton, Wordsworth and Keats at an early age. One day she stumbled upon PB Shelley's *Ode to the West Wind*, in a book given to her by her father. It left a lasting impact on her life, as she points out in the catalogue of her exhibition titled "Zephyrus", being held at the Alliance Francaise.

"When my father would teach the cadets, we heard the poem. Initially when I read it, I was excited but as I grew up, I understood its real meaning," says the artist, who teaches at the Textile Design department of the National Institute of Fashion Technology, Delhi. The poem was penned by Shelley in Florence in 1890, on a day when dark clouds and lightening were the only friends of the sky, and the Peterloo Massacre in England had refused to leave the minds of many people reeling under political, economic, social and religious oppression. The show, which comprises 34 works, shares its title with the Greek god of the West Wind. Employing an old fibre craft of hand

felting and using wool fibres is a work whose title borrows lines from Shelley's poem, "*Mid the steep sky's commotion loose clouds like earth's decaying leaves one sheds, shook from the boughs of heaven*", where white clouds billowing in the



dark sky, spread like smoke.

A huge wall-sized carpet grabs our attention. Made using the technique of hand tufted carpet weaving, the words "*If there is darkness now, there will be life and growth tomorrow*", give an insight into the work. As weathered trees look dull and weary in one half of the carpet, they move towards greener patches in the latter half, to signal the transition from winter to spring.

While looking at the poem in an abstract, symbolic manner through her works, Mathur says, "The essence is that if things have reached a dead end, there is still hope. It shows how wind creates different seasons. The poem and my works are metaphoric to our lives — of how there is happiness after sorrow and death. Every line of the poem has been so powerful and in every year of my life, the meaning of the poems makes more sense."

Using the dying craft and the Persian style of weaving, a Soumak rug, comprising autumnal shades of bright orange, deep red and mustard yellow, gives physical form to the lines "*Will take from both a deep, autumnal tone*". The work, *If winter comes, can spring be far behind?*, employs the hand felting method, giving the perfect ending to the show, with weathered tree-like structures disappearing into a storm of rainbow colours. "My idea was to explore as many techniques and traditional crafts of tie-dye, felt making, embroidery, appliqué and patch-work, tufted carpet weaving and Persian Soumak weaving in innovative ways," she says.

The exhibition is on display at Alliance Francaise till January 12.
Contact: 43500200

क्लासिक और अलग लुक के लिए कुछ एवरग्रीन ट्रेंड



अस्मिता अग्रवाल

22 साल से फैशन राइटिंग में चर्चित नाम, नई दिल्ली।

रितु कुमार को फैशन गुरु कहना गलत नहीं है। 60 के दशक में डिजाइनिंग के क्षेत्र में कदम रखने वाली रितु कुमार के देशभर में करीब 37 फैशन स्टोर हैं। 2015 तक यह आंकड़ा दोगुना हो जाएगा। फिलहाल उनका फोकस ई-रिटेल बिजनेस और ऑनलाइन शॉपिंग पर है। यहां तक पहुंचने का सफर काफी इंटरस्टिंग रहा, जानते हैं उनसे...



डिजाइनर रितु कुमार।

रितु ने कोलकाता के बुनकरों के साथ ट्रेडिशनल ब्लॉक्स के साथ डिजाइनिंग कैरियर की शुरुआत की। तब वे नहीं जानती थीं कि इंडियन फैशन इंडस्ट्री का चेहरा बदल देंगी। वे बताती हैं उन्होंने क्लासिक साड़ी बेहद पसंद थी। उस वक्त सलवार-कुर्ता या सलवार-कमीज का ट्रेंड नहीं था। महिलाएं साड़ी में ज्यादा पैसे खर्च करती थीं, जिसे वे आने वाली पीढ़ियों को भी दे सकें। लेकिन अब साड़ी सिर्फ खास आयोजनों तक सीमित हो चुकी है। इन दिनों गाउन फैशन में है।

अमृतसर में जन्मी रितु कहती हैं कि क्लासिक साड़ी सिलेक्ट करते वक्त सिर्फ एक बात पर ध्यान रखिए कि स्कूल ऑफ़ डाइंग या वीविंग से साड़ी सिलेक्ट करें। इन्हें किसी भी ऑकैजन में पहन सकते हैं। ब्याह-शादी या कॉकटेल के लिए सैफ़न, रेड या पिंक कलर में कांजीवरम साड़ी अलग दिखेगी।

वर्किंग महिलाओं के लिए स्टिचड साड़ी कॉन्सेप्ट नया है। चाहे आपके पास हर डिजाइन और स्टाइल का गाउन है, लेकिन एक बनारसी साड़ी होनी चाहिए। इस पर पासले मोटिफ और प्योर ज़री वर्क निखरकर आता है। इस स्टाइल की साड़ी विंटेज पोलका चोकर के साथ सुंदर दिखती है। रितु कुमार साड़ी पहनना पसंद करती हैं। कई मिस इंडिया से लेकर लेट प्रिंसेस डायना को साड़ी आउटफिट



फ्री प्लोइंग फैब्रिक और प्रिंट्स के साथ प्रयोग खूबसूरत दिखते हैं। सिंगल कलर में फुल इस कॉन्सेप्ट नया कॉन्सेप्ट है।

में तैयार कर चुकी हैं रितु। उनका बेटा अमरीश अब उनका लेबल संभाल रहे हैं। हाल ही में रितु ने नया वेंचर शुरू किया है। उन्होंने बनारस में 20 से 30 लूम्स खरीदी हैं। उनका फोकस बुनकरों के क्राफ्ट वर्क को जीवित रखना है। उन्होंने इसे मॉडर्न इनपुट के साथ सजाया है। कॉरपोरेट इवेंट के लिए छोटे बॉर्डर वाली बनारसी साड़ी परफेक्ट ड्रेस है।

रितु को टाई एंड डाई टेक्निक बहुत पसंद है। वे साड़ी को ईजी और प्लोइंग बनाने पर फोकस रखती हैं, रफ या हार्ड नहीं। वे कहती हैं कि लंच पार्टी के लिए लहरिया टाई एंड डाई में ब्लू या ग्रीन कलर अच्छा दिखता है। इसे पहनना भी आसान है। ये बॉडी कर्व के साथ अच्छी दिखती

है। इसे पहनने से कैजुअल, क्लासिक और पनाश लुक आता है।

वे बताती हैं कि गुजरात की बांधनी साड़ी सबसे चर्चित है। भारत में अब तक का सबसे बड़ा सरवाइविंग ट्रेडिशनल क्राफ्ट है। यंग महिलाओं को बांधनी साड़ी पहनने के लिए कहती हैं। कुर्ते या ड्रेस को पल्लभर में पॉपअप बनाने के लिए बांधनी स्टोल अच्छा दिखता है। इसे सिल्क बेस पर भी तैयार कर सकते हैं। बांधनी साड़ी में ब्लैक एंड बरगंडी शिफॉन साड़ी फबती है। इसे कई स्टाइल के ब्लाउज जैसे मिरर वर्क, कुची एम्ब्रॉयडरी वर्क वाली चोली या कुर्ती के साथ पहना जा सकता है। कॉकटेल पार्टी के लिए ब्लैक और रेड शिफॉन साड़ी बेस्ट ऑप्शन हैं।